पाठशाला
भीतर और बाहर
पाठकों के विचार

बहुत ही सुचिन्तित और व्यवस्थित पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। हिन्दी भाषा में इस तरह की शोध-आधारित पत्रिकाओं का अभाव है। इस पत्रिका की सबसे अच्छी बात यह लगी कि शोध करने वालों में सिर्फ़ विश्वविद्यालय की दीवारों में बन्द लोग न होकर स्कूलों के शिक्षक और बच्चे भी शामिल हैं। इससे चिन्तन और शोध का दायरा बढ़ा है। सन्दर्भों में एकरूपता का अभाव है और कई लेखों में और बेहतर सम्पादन की भी ज़रूरत है। बाक़ी एक अच्छी पत्रिका के लिए बधाई।

– संदीप, शिक्षक, जयपुर

अंक 7, मार्च 2021

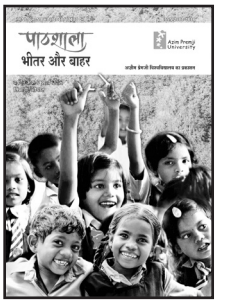

पत्रिका में लेखकों ने शिक्षकों को करके सीखने और बच्चों को खोजी प्रवृत्ति की ओर अग्रसर किया है। इससे विद्यालय में उपलब्ध वस्तुओं की सहज सुलभता एवं व्यवस्थाओं का आगाज़ हुआ है, साथ ही भाषाई खेलों के विविध माध्यम से विभिन्न वाक्यों का प्रयोग करते हुए बच्चों में एक्सपेक्टेंसी तथा सुधारों पर ज़ोर दिया गया है। इसमें साथी बच्चों द्वारा एक दूसरे से सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिला है एवं बच्चों को पर्यावरण के नज़दीक लाया गया है। ऑनलाइन टीचिंग के विभिन्न पहलुओं पर बात की गई है और जेंडर सेंसिटिविटी के लिए भी पर्याप्त विवरण पत्रिका में उपलब्ध है जिससे बच्चों में सहजता के भाव को विकसित किया जा सकता है। विद्यालय परिसर में बच्चों को किसी भी प्रकार के शोषण से भयमुक्त रखे जाने पर ज़ोर दिया गया है एवं विद्यालय को एक घर जैसा स्वरूप दिया गया है। शिक्षकों को भी अपनी ज़िम्मेदारी के प्रति पर्याप्त रूप से जागरूक होने की आवश्यकता पर बल देते हुए कर्तव्यारूढ़ रहने को ज़िम्मेदारी बताया गया है और मूल्यांकन के विभिन्न पक्षों पर ज़ोर देकर समझाया गया है, साथ ही भारतीय संविधान के परिप्रेक्ष्य और मूल्य को जीवन्त किया गया है।

– धरम पाल 'ज्योतिष' अध्यापक, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, अरावडी जमवा, रामगढ़ जयपुर

एक शिक्षक होने के नाते इस अंक को पढ़कर मुझे बहुत सारी चीज़ें जानने, समझने और सीखने को मिलीं। इस अंक में सभी लेखकों ने बहुत अच्छा लिखा और अपने अनुभव साझा किए, चाहे वह शिक्षणशास्त्र पर हो, कक्षा के अनुभव हों, विमर्श हो या संवाद। सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं।

कुसुमलताजी ने 'भाषा शिक्षण और भाषाई खेल' में खेल गतिविधियों के माध्यम से बड़े ही रोचक ढंग से बच्चों को भाषा सिखाई। बहुत प्रभावशाली लेख।

हुमा नाज़ सिद्दीकी का शिक्षणशास्त्र पर लिखा लेख 'विज्ञान शिक्षण करके सीखना और शिक्षक की भूमिका' ने मुझे बहुत प्रभावित किया। इस लेख में विज्ञान दिवस पर शिक्षकों का बच्चों के साथ उनकी पाठ्यपुस्तकों के टॉपिक को लेकर शोध प्रस्तुत किया गया है। शोध के लिए बच्चों

ने आसपास का अवलोकन किया। लोगों से चर्चा की, नमूने इकट्ठे, किए आँकड़ों का विश्लेषण किया, इसके लिए वे मार्केट, अस्पताल, आँगनवाड़ी, खेतों, नर्सरी, आदि में गए और समुदाय से मिले। सभी जगह गए ख़ुद ऑब्ज़रवेशन किया जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा। समुदाय के लोगों को भी बच्चों की सक्रियता देखकर अच्छा लगा। बच्चों ने कार्य किया और शिक्षिका ने मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। इस लेख को पढ़कर मुझे भी प्रेरणा मिली कि मैं भी अपने विद्यालय में इस तरह के कार्य करवाऊँ।

रंजनाजी ने समाज में जेंडर भेद के कारण बालिकाओं के साथ हो रहे भेदभाव को अच्छे-से उकेरा।

शिशिर चंद्र नायक के लेख से जाना कि बच्चों के साथ कैसे कार्य करें। कक्षा अनुभव, शिक्षणशास्त्र, पुस्तक चर्चा, साक्षात्कार, संवाद आदि सभी बहुत ही अच्छे ढंग से प्रस्तुत किए गए लेख हैं।

– सुमन चौधरी, शिक्षक, टीबा श्योपुर सांगानेर शहर, जयपुर

शैक्षिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर लिखे हुए अनुभवशील लेख को पढ़ने का अवसर देने के लिए *पाठशाला भीतर और बाहर* की पूरी टीम का आभार। शिक्षणशास्त्र के अन्तर्गत प्रकाशित और शिक्षिका कुसुमलता द्वारा लिखित 'भाषा शिक्षण और भाषाई खेल' यह समझने में मददगार है कि कैसे खेल भाषा शिक्षण का अभिन्न अंग हैं।

बलवंत सिंह कालाकोटी द्वारा लिखित और कक्षा अनुभव के अन्तर्गत प्रकाशित लेख 'शिक्षण-अधिगम सामग्री की समझ एवं उसका उपयोग' शिक्षण प्रक्रिया में इस्तेमाल किए जाने वाले संसाधनों की समझ को बयाँ करता है। आपने जिस टीएलएम की चर्चा की है वह हमारे परिवेश में आसानी से उपलब्ध हो जाता है और बच्चों को व्यवहारिक जीवन से जोड़ता है। यह लेख गणित को कठिन विषय के रूप में समझे जाने की पारम्परिक धारणा का खण्डन करता है।

बाल साहित्य में अपार क्षमताएँ और ढेरों सम्भावनाएँ निहित हैं– केवल भाषिक कौशलों की दृष्टि से नहीं बल्कि नज़रिए को विस्तार देने की दृष्टि से भी, केवल उत्साही पाठक बनाने के लिए नहीं अपितु भाषा के सटीक इस्तेमाल, सही भाव, सम्पूर्ण व्यक्तित्व को निखारने, गढ़ने और सम्प्रेषण की दृष्टि से भी।

'बाल साहित्य के बिना अधूरी है बच्चों की शिक्षा' यह संवाद विभिन्न नज़रियों से बाल साहित्य और उसके विविध इस्तेमाल को समझने में मदद करता है। विशेषकर लॉकडाउन से उपजी परिस्थिति में पढ़ने-लिखने की शुरुआत करने में यह उपयोगी व बहुत ही महत्त्वपूर्ण संसाधन के रूप में दिखाई देता है।

– अवनीश कुमार मिश्र, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, टिहरी गढ़वाल

अंक 6, दिसम्बर 2020

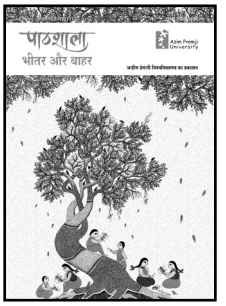

खेल हमें गीतों में भी देखने को मिलते हैं। इसके साथ ही भाषाई पृष्ठभूमि का पुट भी देखने को मिलता है जिसमें अकसर बच्चों को सीखे गए गीतों को बार-बार केवल आनन्द के लिए दोहराते देखा जाता है। ये बात तो जगज़ाहिर है कि बच्चों को गीत बहुत पसन्द होते हैं और ये हम अपने बचपन में भी महसूस कर चुके हैं। खेल गीत बाल साहित्य का हिस्सा भी हैं। लेकिन हम देखते हैं कि ये खेल गीत बच्चों के खेल के स्थान और खेलने तक ही सीमित

होते हैं जिन्हें बच्चे सहज रूप से सीख लेते हैं लेकिन कक्षा में ऐसे गीतों को शायद ही स्थान दिया जाता है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि इन गीतों में प्रयोग हुए शब्द शिक्षकों को भाषा शिक्षण के लिए अनुपयुक्त या अशिष्ट लगते हैं, लेकिन बच्चों को शब्दों से खेल और तुकबन्दी मज़ेदार लगती है।

शारदा कुमारी ने इस लेख में बताया है कि इन खेल गीतों को सिर्फ़ संस्कृति और सामूहिकता का प्रतीक ही नहीं, अपितु बच्चों के सामाजिक, संवेगात्मक और भाषिक विकास के लिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण माना गया है। सुर, लय व ताल के साथ गाई जाने वाली इन तुकबन्दियों में बच्चों ने कभी अर्थ ढूँढ़ने की कोशिश की हो ऐसा किसी भी समाज के इतिहास में नहीं हुआ होगा, फिर भी बिना प्रयास के कण्ठस्थ कर लेना और पूरे जोश व आनन्द के साथ गाना, यह हर जगह देखने को मिल जाएगा।

मुझे इस लेख का सबसे महत्त्वपूर्ण भाग यही लगा कि किस प्रकार शारदा कुमारी ने खेल गीतों को भाषा विकास में महत्त्वपूर्ण समझते हुए पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया के साथ जोड़ा। खेल गीतों को लेकर जो आम धारणा रही है कि इन्हें कक्षा में स्थान नहीं दिया जाता है। ऐसा ही कुछ अनुभव इस लेख में देखा जा सकता है जब शिक्षिका ने बच्चों को उनके खेल गीत आमलेट... को लिखने की बात कही तो बच्चों में सन्नाटा छा गया और फिर किसी एक बच्चे ने कहा कि ये भी कोई लिखने की बात है! इन बातों से समझ आता है कि बच्चों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल करने से पहले एक शिक्षक द्वारा उन्हें यह विश्वास दिलाना ज़रूरी है कि उनकी किसी भी प्रकार की बात, सवाल और उनके विचार महत्त्वपूर्ण हैं जिसके लिए शिक्षक को उन्हें सुनना चाहिए और प्रतिक्रिया देनी चाहिए। साथ ही बच्चे भी आकलन करते हैं कि सिखाने वाला उन्हें वास्तव में महत्त्व दे रहा है या नहीं।

जब भी पढ़ना सिखाने की बात होती है तो एक सवाल जो हमारे मन में आता है कि पढ़ने की शुरुआत कैसे हो, क्या सामग्री प्रयोग करें और पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया कैसी हो? इन सभी प्रश्नों का जवाब यह लेख सुझाता है।

– सपना, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, नैनीताल

मुद्रक तथा प्रकाशक मनोज पी. द्वारा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन फॉर डेवलपमेंट के लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, प्लॉट नं. 163-164, त्रिलंगा कोऑपरेटिव सोसाइटी, E-8 एक्सटेंशन, त्रिलंगा भोपाल, मध्यप्रदेश 462039 की ओर से प्रकाशित एवं गणेश ग्राफ़िक्स, 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, जोन-1 भोपाल द्वारा मुद्रित।

सम्पादक : गुरबचन सिंह